MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2021
Special Issue-02

अतिथि संपादाक :

१. शिवशेट्टे गोविंद
२. डॉ. राठोड अनिल
३. डॉ. भगवान कदम
४. डॉ. शिंदे प्रकाश
५. डॉ. शेख मुख्त्यार
६. डॉ. वारले नागनाथ
७.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
15 May 2021

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम
YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyawarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.940 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

66) हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना
डॉ.संतोष गिरहे, नागपुर (महाराष्ट्र) ||247

67) हिंदी साहित्य में दलित साहित्य का बदलता परिदृश्य
शीशराम मीणा, उदयपुर ||251

68) चुनौतियों के तहखाने में आदिवासी समाज ('जंगल पहाड़ के पाठ' के विशेष ...
डॉ. प्रिया ए., कोट्टयम, केरल ||254

69) भारतीय संविधान में आदिवासी जनजाति के संदर्भ मे प्रावधान
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे, जि. लातूर ||257

70) आदिवासी साहित्य उद्गम और विकास
प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव, जि. नाशिक ||259

71) हिंदी कथा साहित्य में चित्रित आदिवासियों की जीवन शैली
प्रा. गणेश दुंदा गभाले, ता.जि. सातारा, (महाराष्ट्र) ||261

72) भूमंडलीकरण के बढते प्रभाव का विश्लेषण :ग्लोबल गाँव के देवता
डॉ.भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे, सातारा ||265

73) दिनकर की दृष्टि में भारतीय संस्कृति की पुरोधा आदिम जनजातियाँ
तरुण पालीवाल, उदयपुर, राजस्थान ||269

74) आदिवासियों का वन संघर्ष
डॉ. नीतू परिहार, उदयपुर ||272

75) 'धरती आबा' नाटक में आदिवासी विमर्श
प्रा. पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत, पनवेल ||275

76) आदिवासी समाज की मुकव्यथा के संदर्भ में उदय प्रकाश की कहानी ...और ...
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे, जि नांदेड़, महाराष्ट्र ||278

77) आदिवासी कहानियों में अस्मिता संघर्ष
डॉ.सचिन सदाशिव शिंगाडे ||282

78) जंगल जहाँ शुरू होता है में व्यक्त आदिवासी जीवन का आर्थिक संघर्ष
प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार, जि. बीड, महाराष्ट्र ||286

79) हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर ||289

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

80) पाँव तले की दूब उपन्यास में आदिवासी विमर्श
डॉ. सुनील एम. पाटिल, धुलिया ||292

81) इक्कीसवीं सदी की प्रथम दशक की कहानियों में आदिवासी संवेदना
राठोड़ ज्योति चंद्रकांत, हैदराबाद, तेलंगाना ||296

82) हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
प्रा.निर्मला धोंडीराम घाडगे, जिला— सातारा ||302

83) अरण्य में सूरज : आदिवासी समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन
एकनाथ गणपती जाधव, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र) ||305

84) आधुनिक चिंतन और आदिवासी विमर्श
डॉ. अनीता मालवीय, जिला (धार) ||307

85) 'रेत' कंजर आदिवासी समाज का दस्तावेज
सातपुते मिनेश रामनाथ & डॉ. जितेंद्र पितांबर पाटील, नाशिक ||312

86) वृध्द विमर्श : चीफ की दावत और वापसी कहानी के संदर्भ में
डॉ. देविदास भिमराव जाधव, जिला.नांदेड ||315

87) कहानियों में व्यक्त वृद्धों की विवशता
डॉ. अनिला मिश्रा, आणंद (गुजरात) ||318

88) करधन की आस में...
डॉ. सुनीता मोटे, अ.नगर ||321

89) सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध विमर्श
डॉ.संजीवनी संदीप पाटील, गडहिंग्लज ||324

90) हिंदी वृध्द — विमर्श और सुनीता जैन का काव्य
प्रा. जयवंतराव श्रीराम पाटील, जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र) ||328

91) हिन्दी उपन्यासों में वृद्ध विमर्श
डॉ० अनिता प्रजापत, श्री गंगानगर (राजस्थान) ||332

92) डॉ.सुरजसिंह नेगी के उपन्यासों में चित्रित वृद्ध विमर्श
श्री.महेश बापुराव चव्हाण, जिला—सातारा ||335

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

गया ना ।

इस प्रकार प्रतिरोध करती स्त्रियाँ प्रस्तुत कहानियों में दर्शायी है जो अपनी अस्मिता के लिए अजीवन संघर्ष करती है । इन समग्र कहानियों के पात्र अपने उपर होने वाले जुल्म का विरोध कर अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए सदा तत्पर दिखाई देते है । यह पात्र अपने संघर्ष के माध्यम से दूसरों को भी अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रतिरोध करने की प्रेरणा देते है ।

ग्रंथ सूची

१— आदिवासी साहित्य विमर्श, संपादक— गंगा सहाय मीना

२— आदिवासी कहानियाँ, संपादक— केदारप्रसाद मीना

३— रेसेस एण्ड कल्चर्स ऑफ इंडिया, डॉ. डी. एन. मजूमदार

१ रेसेस एण्ड कल्चर्स ऑफ इंडिया, डॉ. डी. एन. मजूमदार, पृ— ३९५

२ आदिवासी साहित्य विमर्श, संपादक— गंगा सहाय मीना, पृ— १३७

३ शहर के दाग का दान, आदिवासी कहानियाँ, संपादक— केदारप्रसाद मीना, पृ— ११५

४ हांका, आदिवासी कहानियाँ, संपादक— केदार प्रसाद मीना, पृ— १४३

५ डायनमारी, आदिवासी कहानियाँ, संपादक— केदार प्रसाद मीना, पृ— १५२

६ महुआ का फूल, आदिवासी कहानियाँ, संपादक— केदारप्रसाद मीना पृ— ८२

□□□

78

जंगल जहाँ शुरू होता है में व्यक्त आदिवासी जीवन का आर्थिक संघर्ष

प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

हिंदी विभागाध्यक्ष,

कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढी,

ता. गेवराई, जि. बीड, महाराष्ट्र

आदिवासी समाज सदियों से जंगल में निवास करके अपनी हर जरूरत को जंगल, जमीन और पेड पौधों व्दारा पूर्ण करता रहा। वह अपनी हर आवश्यकता की पूर्ति के लिए जंगल पर निर्भर रहता आया है। इसके साथ—साथ वह पशुपालन एवं खेती भी उसके उदरनिर्वाह के साधन रहे है। आरंभ में संसाधन या चीजों के बदले चीजें का वस्तुविनय व्यवहार था । किंतु स्वतंत्रता के बाद जंगलों का राष्टीयकरण कर वहां पर बडे बडे अभयारण्य बांध का निर्माण होने लगा। जंगलो से प्राप्त होने वाली वनसंपदा पर अब आदिवासियों का हक्क समाप्त हो चुका था। जीवका के साधन उनसे छिन लिए गये। अब जंगल में रहकर जंगलों की चीजों को हाथ लगाना या उन्हें शहर में लाकर बेचने को अपराध कहा जाने लगा। अब जंगलों की निगरानी हेतु पुलिस का बदोबस्त होने लगा। सरकारी अफसर और पुलिस दोनों मिलकर इन्हें झूठे इलजामों में फसाकर इनके बहु बेटियों पर दूशकर्म करना या उनपर अन्याय अत्याचार करना या यौन सुख की मॉग करना आम हो गया था। नहीं तो इन आदिवासियों का चौरी और डकैती के जूर्म में अंदर करना और बाहर निकालने के लिए पैसों की मॉग करना यह आम हो गया। आज भी आदिवासी रोजी—रोटी के अभाव में भूख से बेहाल होकर कुपोषण से मौत के घाट उतर रहा है। इतना अभावग्रस्त सुविधाहीन जीवन जीने के लिए उसे यहाँ की व्यवस्था और तंत्र ने बाध्य किस प्रकार किया है

इसका सशक्त चित्रण संजीव ने अपने उपन्यासों में किया है। इस तरह इन आदिवासियों का आर्थिक शोषण किया जा रहा है इसका बेबाक चित्रण संजीव ने अपने विवेच्य उपन्यास जंगल जहाँ शुरू होता है में किया है।

आजादी के ७४ साल बाद भी आदिवासी समाज दरिद्रता और अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। उनके अर्थार्जन के साधन उनसे छिने जाने के बाद जमींदार, पूंजीपति समाज के ठेकेदार के अत्याधिक शोषण का शिकार होने से यह समाज वर्तमान समय में घोर दरिद्रता में जीवनयापन कर रहा है। विवेच्य उपन्यास श्जंगल जहाँ शुरू होता हैश में मिनी चंबल के धारूओं के इलाके में भी दरिद्रता का आलम छाया हुआ है। कुमार यहाँ के धारूओं के आर्थिक जर्जरता को देखकर कहता है— आबादी की सघनता धीरे—धीरे कम होती गई। सिर्फ फूस के घरेंदे या खपरैल ओ भी दूर—दूर। दूर से झाँकते स्त्री—पुरूष बच्चे जीप के पास आते ही कछुए की तरह गर्दन घुसेड लेते लुंगी, गमछे, धोती, भगवे में लोग देश के आम गाँवों से ज्यादा दरिद्र ज्यादा बिमार, ज्यादा निरिह। १ इस प्रकार संथाल और धारू आदिवासी ही नहीं तो मुण्डा और अन्य आदिवासी भी आज पशु जैसा अभावग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर है। जो रोटी कपडा और मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए तरसते तडपते है। आदिवासियों के पास क्षमता, समय और आवश्यकता होने के बावजूद भी उनके हाथों को काम निहीं मिलने के कारण उन्हें अभावग्रस्त जीवनयापन करना पड रहा है। उन्हें असभ्य, गँवार समझकर काम नहीं दिया जा रहा है। विवेच्य उपन्यास में धारू आदिवासी बिसराम और काली में काम करने की क्षमता है फिर भी उन्हें रोजी नहीं मिलती। जमींदार चंद्रदीप सिंह उनकी जमींन, गाय, भैस हडपकर मजदूर बनाते है। परिणाम स्वरूप उन्हें रोजी—रोटी के लिए दर—दर घूमना पडता है। बिसराम अपनी इस व्यथा को व्यक्त करता है— पहले चीनी मिलें बंद हुई, फिर खेत बंधक हुए, भैसे गई, मेहरारू मरन सेज पर और बेटी को साँप ने डँसा। २ काली अपने परिवार को चलाने के लिए कुछ भी काम करने के लिए तैयार है पर ठेकेदार नहर पर महिना भर काम करवाता है, पैसे माँगने पर पीटवाता है। आखिर में बेकारी से तंग आकर वह सुलेमान के घर पर बिगार करने के लिए भी बेबस हो जाता है। जिसमें एक माह के काम के केवल बीस रूपये मिलते है।

आदिवासी अपने सिर पर ऋण लेकर जन्म लेता है, ऋण के बोझ में ही मरता और अपनी संतानों को भी विरासत में ऋण देकर मरता है। जमींदार, पूँजीपति, पुलिस और डाकू के जानलेवा शोषण, अकाल, प्राकृतिक अपदा, अत्याधिक बेकारी और सरकारी साहयता का अभाव, अशिक्षा के कारण आदिवासियों को अपने पर्व, त्यौहार मनाने तथा धान, बीज खरीदने के लिए साहुकार, ठेकेदारें के पास से अपनी जमींन, घर, पशु गिरवी रखकर ऋण लेने के लिए विवश होना पडता है। ऋणदाता अपने मनमानी ब्याज से उन्हें ऋण देते है। जिसे चुकाने के बाद भी बकाया आदिवासियों के सर पर रहता है। जमींन पशु इतना ही नहीं तो इनकी औरतों को भी वे हडप जाते है फिर भी उनके ऋण से उऋण नहीं होते है। समाज में व्याप्त अंध विश्वास, व्यसनाधिनता और उत्सवप्रियता भी इन्हें कर्जदार बनाने के लिए जिम्मेवार है। श्जंगल जहाँ शुरू होता हैश में धानकटी के मौसम में मेले में जाकर शराब पीकर मौज मनाने वाले धारूओं को देखकर मलारी कहती है—जाओं! इस नाच—तमाशा और पहुनाई में वैशाख तक आते—आते सब धान लुटवाकर फिर करज लो या मजूरी के लिए गिडगिडओं । ३

समाज में आर्थिक संसाधनों के असंतुलित वितरण को आर्थिक विषमता कहा जाता है। आदिवासी बसाहटों में आर्थिक विषमता बडी मात्रा में आज भी दशष्टिगोचर होती हैं। श्जंगल जहाँ शुरू होता हैश उपन्यास में मिनीचंबल में स्थित भयावह आर्थिक विषमता को देखकर कुमार कहता है—दरिद्रता का आलम ओढे धारूओं और घाँगडों के गाँव ! जहाँ—तहाँ पेड और झाडियाँ, शेष सूखे की मार से कहारती धरती। इस धरती पर भी कब्जा किसका है? जबाब की तरह खडी थी गाँव के बीच में चंद्रदीप सिंह की हवेलीनुमा बखरी । दो टैक्टर कृ पंक्तिबध्द पक्की नादों की कतार, भैसे —गायें चार बैल पहले बैठका,

मिडिल स्कूलनुमा फिर सामने दो मंजिली हवेली। ४ मिनीचंबल के इस इलाके में चंद्रदीप सिंह और ललनबाबू जैसे कई जमींदार है जो यहाँ के जनसंख्या का एक प्रतिशत हैं जिनके पास केवल पाँच प्रतिशत जमीन है। इस प्रकार की भयंकर आर्थिक विषमता इस क्षेत्र में आज भी विद्यमान है।

अपने निजी स्वार्थ के लिए व्यक्ति को बंधुआ के रूप में रखना मानव की मानव के प्रति ऐसी क्रुरता है, जो किसी विशेष देश या क्षेत्र तक सिमित नहीं है बल्कि सार्वभौमिक सत्य घटना है, जो सैकडो वर्षों से चली आ रही है। भारत में आदिवासी, दलित जैसे सर्वहारा वर्गों का बेगार प्रथा व्दारा अरसो– बरसो से शोषण हो रहा है। जिसके हजारों आदिवासी स्त्री–पुरूष संत्रास आज भी भुगत रहे है। ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में आज इक्कीसवीं सदी के ज्ञान–विज्ञान के युग में मिनी चंबल इलाके में स्थित थारू, धांगड, दुसाध जैसे कई जमातियों के लोग अपने आर्थिक स्थिति की जर्जरता के कारण यहाँ के पूँजीपतियों के घर पर बेगार करने के लिए बेबस है। संजीव ने इस उपन्यास के माध्यम से मानवता को शर्मसार करनेवाली इस प्रथा को बेनकाब किया है। थारू युवक काली पढा लिखा है परंतु उसे कही भी नौकरी एवं मजदूरी नहीं मिलती। चीनी मिले बंद होते तथा नहर का काम समाप्त होते ही वह फिर से बेकार होता है। जमीन बैल, भैस जमींदार कर्ज में छीन लेता है। घर में बीमार भाभी के इलाज के लिए कौडी भी नहीं है, खाने के लाले पडे हुए है। ऐसी स्थिति में वह सुलेमानखाँ ठेकेदार घर पर बेगार कर अपने घर बीस रूपये भेजता है और उसके बदले अजीवन सुलेमानखाँ का गुलाम बनकर दिन–रात उसके यहाँ मेहनत करता है। काली के साथ धांगड, फेकन, नरैना की भी हालत यहीं है। इसी प्रकार आदिवासी स्वयं को पूँजीपतियों के घर गिरवी रखकर अपने परिवार की भूख मिटाने क लिए लाचार होकर वेठविगार करते है।

अपने आप को सभ्य और उच्च वर्गीय समझनेवाले समाज ने ही इनकी लूट कर इन्हें चारी करने के लिए मजबूर और बेबस किया इस पूरी व्यवस्था और तंत्र को कटघरे में खडा करते हुए ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में कुमार कहता है– यह निरीह–सा दिखनेवाला जोगी असाधारण क्रिमीनल है। दुनिया में कौन–सा अपराध है जो इसने नहीं किया। झुठ दगा, फरेब पशु से लेकर औरतों तक की चोरी और बलात्कार, बेटिबचाव, गांजा भाँग से लेकर हथियारों की स्मगलिंग, भ्रुण से लेकर शिशु और नर हत्या तक क्ृ इस जोगी को बनाया किसने? सत्ता, व्यवस्था, संस्कृति और विकास के हडबोंग की नाजायज संतान है यह जोगी। और वे सत्ता के शिखरों पर बैठे सफेदपोश उन्हें यह गम नहीं की इनके हरम के इन हरामजादों की क्या अधोगति हो रही हैं। क्या हक है उन्हें संस्कृति पर लेक्चर पोंकने का?। ५ कोई भी व्यक्ति और समाज जन्म से अपराधी एवं चोर नहीं होता । वह तो यहाँ की शोषणकारी व्यवस्था, भ्रष्ट प्रशासन और स्वार्थी सत्ताधारी व्यवस्था की देन होती है। आदिवासियों का चोरी करना और वैश्या बनना सारे मानवीय संस्कारों और सरकारों की धज्जियाँ उडाता है। ‘जंगल जहाँ शुरू होता है’ उपन्यास में व्यक्त आदिवासी समाज की आर्थिक स्थिति, अर्थाजन के साधन और आर्थिक संघर्ष के विविध रूप दृष्टिगत होते हैं।

संदर्भ सूची

१. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है पृष्ठ संख्या १०

२. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है पृष्ठ संख्या ९२

३. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है पृष्ठ संख्या १५५

४. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है पृष्ठ संख्या ५०

५. संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है पृष्ठ संख्या २८३

❑❑❑

79

हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी स्त्री

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख,
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

****

आदिवासी समाज सदियों से अभावग्रस्त जीवन जीने को मजबुर है। विकास की मुख्यधारा से कटिहुई जमात आदिवासियों की है। उनका संपुर्ण जीवन त्रासदी, दुख, तिरस्कार, अपमान, घृणा और शोषण से भरा होता है। आर्थिक, समाजिक, शैक्षणिक एवं राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों से अनादीवर्शो से दुर्लक्षित रहे है। आदिवासी भौतिक सुखसाधनों कि उपलब्धता तो बहुत दूर की कौडी हैं। दो वक्त की रोटी, सर पर छप्पर पहननेके लिए अच्छे कपडे तक आदिवासीयों के पास नहिं होते है। शिक्षा एवं आरोग्य सुविधा से दूर्लक्षित होने के कारन, इनका जीवन अत्यंत हिन एवं दिन होता है। उदरनिर्वाह के संसाधन अत्यंत अल्प होने के कारन संपुर्ण जीवन अभाव में बिताना पडता है। अनेको विकशतियाँ, विसंगतियाँ एवं विडंबनाए जीवन के हर रास्ते पर काँटो की तरह बिखरे होते हैं। अधिकतर अदिवासी जन जातियाँ घुमक्कडी के कारन अस्थिर होती हैं। उनका भविश्य तों गहरा अधकारमय होता है।आदिवासी स्त्रीयों का जीवन तों अनेको समस्याओं का पुलिंदा है। आदिवासी और स्त्री होने की दोहरी विचित्र एवं विकृत मानसिकता से आहत होती है। स्त्रीयों का जीवन तो अत्यंत विक्षिप्त और शोषित होता है। सरकार, प्रशासन, पुँजीपती, जमीनदार, तथाकथित उच्च वर्ग के लोग और आदिवासी पुरूश सभी उनका शोषण करते है। उन्हे अपनी वासना का शिकार बनाने के लिए सदैव मौके की ताक में रहते है आदिवासि स्त्रीयों का उपभोग करना वे अपना अधिकार समजते हैं। सामाजिक व्यवस्था के ठेकेदार उनकी मजबुरियों का फायदा उठाकर उनका शरीर एवं जमीनों को भोगना चाहते है। आदिवासी स्त्रीयाँ अनपढ होने के कारन, अंधश्रद्धा, शोषित परंपरा, कुठित रीति रिवाजों को मानना अपना परम कर्तव्य मानती है। परिनाम स्वरूप वह दुख की अधिकारीनी हो जाती है। स्त्रीयोंको उनका अभावग्रस्त, अपमानित, घृणित, एवं तिरस्कृत जीवन अपने कर्मों के परिनाम स्वरूप हि प्राप्त हुआ है ऐसी उनकी धारना होती हैं। आदिवासी जनजातियों की अनेको परंपरा यह स्त्री षोशण को बढावा देनेवाली होती है। अनेको जनजातियों में एक स्त्री को अनेको पुरूशों के साथ संबंध रखने की परंपरा होने के कारन स्त्री जीवन अंधकार मय, अस्थिर एवं घृणित होता हैं। अपने और अपने परिवार के पेट की आग मिंटाने के लिए वह अपने शरीर तक का सौदा कर देती हैं। इससे विचित्र बात और क्या हो सकती है। आदिवासी स्त्री जीवन की समस्यावों को वाणी प्रदान करने का कार्य आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यास कारों ने प्रभावी रूप से किया है। आदिवासी जनजातियों का सर्वांगिन चित्रण हिन्दी उपन्यासों में किया गया हैं। आदिवासी समाज कि सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक, षैक्षिक एवं धार्मिक परिस्थिती और उन परिस्थितीयों में व्याप्तविकृतियों एवं विडंबनाओं को प्रखरता से उघाडा है। आदिवासी स्त्री जीवन की सर्वांगिन वास्तविकताओं को अभिव्यक्त करने का कार्य हिन्दी उपन्यास कारों ने बडी ईमानदारीसे किया है।

आदिवासी जीवन केंद्रित हिन्दी उपन्यासों में स्त्री जीवन की त्रासदि, पुंजीपती एवं तथाकथित उच्च वर्ग द्वारा होने वाला मानसिक, षारिरिक व आर्थिक षोशन, राजनीति का षिकार होता आदिवासी समाज, प्रशासन द्वारा षोशित, अपमानित आदिवासी समाज । उनकी अंधश्रद्धा, रहन–सहन, वेशभुशा, खान–पान, भाशा षैली, लोकगीत, लोककथाएँ, लोकमुहॅावरे, सभ्यता एवं संस्कृती आदि सभी का सर्वांगिन चित्रण किया है। आदिवासी स्त्री किसप्रकार अभाव संत्रास, एवं पीडा में जीवनयापन करती है। पुरूशप्रधान वासनांध मानसिकता स्त्री किस प्रकार षिकार होती है इसका वास्तविक